Course - 6

Unit - 3

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका :→

जब कोई व्यक्ति समाज में शिक्षण कार्य से जुड़े होते हैं तो उनका कार्य सिर्फ समाज में पढ़ाना लिखाना ही मात्र नहीं होता है बल्कि वह एक नियोजक के रूप में भी कार्य करता है। शिक्षक को उस सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा संस्कृति के बारे में विश्लेषण करना होता है तो वे बहुत ही व्यापक तौड़ पर इस कार्य को करते हैं। ऐसा करने से वो समूहो, परंपराओं, व्यवसायीकरण, सामाजिक वातावरण, जीवन योजना आदि को कुशल रूप से कर पाते हैं।

एक समूह एक विशेष स्थिति में वह आशा करती है कि कोई विशेष व्यक्ति ही उस कार्य को सुचारु रूप से कर सके। ऐसी परिस्थिति आने पर शिक्षक का दायित्व होता है कि वे एक निर्देशक के रूप में कार्य करे तथा अपने समूह को सही दिशा में निर्देश दे। उनका व्यवहार ही उनका परिचय होता है। इस तरह विभिन्न परिस्थितियों में भी उनके व्यवहार उनकी कार्य कुशलता का परिचय दे तथा संघर्षमय परिस्थिति में भी अपने धैर्य का परिचय देते हुए उन्नति की ओर ले जाये। शिक्षक के कार्य के संबंध में स्वाधीनता का अर्थ होता है उसे अपनी कक्षा में विषय वस्तु और पद्धति के प्रयोग करने में, पाठ्यक्रम में परिवर्तन

करने, शिक्षण तथा व्यवसाय संबंधी चुनाव करने आदि की स्वतंत्रता होती है। भारत जैसे विकासशील देशों के संदर्भ में यह समझना होगा कि ऐसे देश का समाज सदियों से परंपरागत दकियानूसी, सामाजिक कुरीतियों में फँसा हुआ है। प्रायः कृषि प्रधान समाज होने तथा अशिक्षा की वजह से समाज का विकास बेहतर नहीं हो पाया था लेकिन अब कुछ सालों से उनमें एक आधुनिक, विकासशील तथा आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने की इच्छा बनी हुई है।

आधुनिक भारतीय समाज के बारे में एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि यह एक धर्म निरपेक्ष समाजवादी और लोक कल्याणकारी प्रजातांत्रिक देश बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है।

प्रायः शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को सामाजीकरण करना माना जाता है। परंपरागत समाजों में जिनमें सरलता, पिछड़ापन और जीवन पद्धतियों का प्रचलन कम होता है। ऐसे समाज में भी शिक्षक परंपरागत रूप से विकास को चला रहा है लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में परंपरागत रूप से सामाजीकरण से ही काम नहीं चलेगा। क्योंकि इसमें काफी परिवर्तन हो रहा है जो समाज में देखने को मिलता है। अतः शिक्षक को एक नए प्रकार के सामाजीकरण देने का प्रयास करना होगा।

Scanned with CamScanner

उसे समाज सुधारक का रोल निभाते हुए सांस्कृतिक और सामाजिक कुरीतियों को दूर करना होगा। सामाजिक परिस्थिति तथा भविष्य की मांगों को देखते हुए उसे नवाचार युक्त शिक्षण विधियों का कुशलतापूर्वक चुनाव करना होगा।

शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम का ज्ञान प्रदान करने से ही नहीं संतुष्ट होगा होगा बल्कि विद्यार्थियों में ऐसे दृष्टिकोण, कुशलताएं विकसित करने होंगे जिससे वे न केवल अपने वर्तमान जीवन में बल्कि अज्ञात भविष्य की विशेषताओं से तथा सामाजिक जीवन के साथ संबंध स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव नहीं महसूस कर सके। क्योंकि शिक्षक का कार्य राष्ट्रीय एकीकरण के स्थापना की दिशा में महत्वपूर्ण है। ऐसे में उन्हें एक धर्मनिरपेक्ष और प्रजातंत्रीय देश का निर्माण करने का दायित्व समाजवादी देश का कार्यकर्ता होने के कारण उससे समाज आशा रखता है कि वह विद्यार्थियों में समाजवादी मूल्यों का प्रसारण करेगा।

विद्यार्थियों के संरक्षात्मक नेता होने के कारण उसके हितों और आदर्शों को भी बनाए रखने की दिशा में कार्य करना होता है। इस तरह विद्यार्थियों के सामाजिक संदर्भ में समाजीकरण करना तथा आधुनिकतम प्रकार का ज्ञान देना होता है। इस प्रकार से शिक्षक के कार्य को सीमित करके नहीं देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

एक शिक्षक का कार्य सामाजिक कारकों से प्रभावित होते रहते हैं। जैसे → विद्यार्थियों, साथी शिक्षकों, शिक्षण संस्थाओं के अन्य सदस्यों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा इत्यादि। भारत में प्रायः यह देखने मे आता है कि शिक्षक अपनी ही इच्छा से अपना कार्य करना चाहते हैं तथा अपने जैसा ही व्यवहार करने का प्रयास करते हैं और अन्य समूहों की आशाओं और इच्छाओं के अनुसार कार्य नहीं करना चाहते हैं। इस कारण वे प्रायः सभी से अलग पड़ जाते हैं जिससे निराशा की भावना का शिकार बन जाते हैं। इससे शिक्षकों की सामाजिक संवेदनशीलता कुंठित हो जाती है। शिक्षक चाहे गाँवों में कार्य करते हों या शहरों में, वे राजनीतिज्ञों से कतराते रहते हैं। उनमे राजनैतिक समाजीकरण बहुत ही कम हो पाता है।

प्रायः शिक्षक विद्यार्थियों और समाज के बीच कड़ी का कार्य करता है। इस प्रकार भारतीय शिक्षा के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि विद्यालयों तथा शिक्षण संस्थाओं मे अब धर्म, जाति, समुदाय, वर्ग आदि के आधार पर विद्यार्थियों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है। सभी प्रकार के समूहों और धर्मों के विद्यार्थी उनमे पढ़ने आते हैं। कई प्रकार के शारीरिक और मानसिक अयोग्यताओं वाले विद्यार्थी भी उनमे पढ़ने आते हैं। राज्य विभिन्न प्रकार की विशेष सुविधाएं प्रदान करना चाहता है। ऐसी परिस्थिति मे जो शिक्षक निष्पक्ष प्रजातांत्रीय, समाजवादी भाव नहीं रखते हैं

Scanned with CamScanner

ने जान-बूझकर या अनजाने में कई बार ऐसा व्यवहार करते हैं जिससे विद्यार्थियों के साथ अन्याय हो जाता है। भारत जैसे विकासशील और प्रजातंत्रीय देश में शिक्षकों को सभी प्रकार के सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से स्वयं को मुक्त करके ही व्यवहार करना चाहिए तभी वे अपने कार्य का सफलतापूर्वक संपादन कर पाएँगे।

इस प्रकार शिक्षकों को इन सभी पक्षों पर निष्पक्ष ढंग से विचार करना चाहिए। भविष्य की माँगों को ध्यान में रखते हुए अपने कार्य और व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक में जितनी अधिक सामाजिक संवेदनशीलता होगी तो उसकी कार्य-क्षमता में भी उतनी ही अधिक वृद्धि होती जायेगी